भाकृअनुप - राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
ICAR – National Research Centre on Camel
पोस्ट बैग सं.07, जोड़बीड़, बीकानेर : 334001 (राजस्थान) भारत
Post Bag No.07, Jorbeer, Bikaner: 334001 (Rajasthan) India

कोरोना महामारी (कोविड-19) के दौरान ऊँट पालकों/पशुपालकों हेतु जरूरी सलाह -

1. पशुपालक नियमित रुप से फ़ेसमास्क एवं सैनीटाइजर का उपयोग करें। उपयोग में लिए हुए फ़ेसमास्क उचित रूप से निकाल कर उन्हें सुरक्षित रूप से नष्ट करें। कपडे से बने फेसमास्क का पुनः इस्तेमाल करने से पहले इसे साबुन से अच्छी तरह धो लें।
2. संक्रमित जगहों/वस्तुओं जैसे- दरवाजे पर लगी घंटी (डोर बेल), दरवाज़े के हैंडल आदि के संपर्क में आने से बचें और अगर छूना ही पड़े तो इसके बाद अपने हाथों को अच्छी तरह से सेनीटाइजर से अवश्य साफ करें।
3. पशुपालक अपने ऊँट फार्म या डेयरी फार्म में नए लोगों की आवाजाही को रोके और जहाँ तक हो सके जैव सुरक्षा उपायों (जैसे-फेसमास्क लगाना, हाथों को साबुन से अच्छी तरह से धोना, सोशल डिस्टेंसिंग आदि) का पालन करें।
4. ऊँट फार्म, पशुशाला आदि में रोजमर्रा के कार्यों को करने वाले श्रमिकों की संख्या कम से कम रखें और कोरोना वायरस (कोविड-19) के संक्रमण से बचाव एवं रोकथाम हेतु सरकार द्वारा समय-समय पर जारी दिशा-निर्देशों को आवश्यक रूप से ध्यान में रखते हुए इनकी पालना आवश्यक रूप से करें।
5. कोरोना वायरस से संक्रमित/पीडित व्यक्ति अथवा इस बीमारी के लक्षण दिखने वाले व्यक्ति (जैसे सर्दी, बुखार, खांसी इत्यादि), ऊँटों/पशुओं के पास बिल्कुल भी न जाएँ तथा न ही वे पशुओं की देखरेख संबंधी कार्यों को करने में लगे स्वस्थ व्यक्तियों को सहायता प्रदान करें।
6. कोरोना के इस दौर में ऊँट पालक/पशुपालक इस बात का ध्यान रखें कि अपने पशु को स्वस्थ और ज्यादा उत्पादक बनाए रखने हेतु उन्हें प्रतिदिन समय पर पौष्टिक एवं संतुलित आहार (चारा-दाना, खल आदि) दें। पशुपालक, पशुओं की खुराक में सूखे चारे के साथ उन्हें हरा चारा और थोड़ा-सा नमक (लगभग 100 ग्राम प्रति वयस्क पशु) मिलाकर अवश्य दें। साथ ही पशुओं को साफ पानी पिलाने की व्यवस्था का भी ध्यान रखें।
7. पशुपालक, अपने पशुओं के आवास की रोजाना/नियमित साफ-सफाई का ध्यान रखें और उनके आवास वाली जगहों में समय-समय पर रोगाणुनाशक दवाओं का छिड़काव भी करें।
8. पशुपालक अपने पशुओं में पाए जाने वाले किसी भी प्रकार से असामान्य व्यवहार जैसे कि- चारा कम खाना, जुगाली नहीं करना, गोबर या मीगनें सामान्य रुप से नहीं करना, पेशाब कम या बार-बार करना इत्यादि की स्थिति में अपने नजदीकी पशु चिकित्सालय अथवा पशु चिकित्सक से परामर्श जरूर करें।
9. बीमार पशुओं को अन्य पशुओं से तुरंत अलग कर दें और आपात स्थिति में नजदीकी पशु चिकित्सक से तुरंत संपर्क करें।
10. गर्भवती पशुओं को छोड़कर सभी जानवरों को पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार अंत: परजीवियों (पेट के कीड़े इत्यादि) से बचाव हेतु कृमिनाशक दवा अवश्य दें। साथ हीं बाह्य परजीवियों (चीचड़, जूं आदि) से बचाव हेतु डेल्टामेथ्रिन या साईपरमेथ्रिन जैसे कि ब्युटोक्स 2-3 मिलीलीटर/प्रतिलीटर पानी में घोलकर इस दवा का पशुओं पर छिड़काव करें अथवा कपड़े से पशु के पूरे शरीर पर यह दवा लगाएं।